यह जिहाद सिर्फ मोहब्बत के खिलाफ नहीं है!

यह दावा किया जाता है कि 'लव जिहाद' एक ऐसी सुनियोजित साज़िश है, जिसमें मुस्लिम पुरुषों द्वारा गैर-मुस्लिम महिलाओं को कथित तौर पर शादी का 'झाँसा' देकर इस्लाम में धर्मांतरण को बढ़ावा दिया जाता है। 'लव जिहाद' का मुद्दा सबसे पहले 2009 में केरल में सामने आया था। लेकिन केरल सरकार ने इस तरह के किसी सुनियोजित गतिविधि के अस्तित्व को नकारा था, फिर भी हिंदू और ईसाई धार्मिक समूहों ने इसे एक खतरे की घंटी माना। पिछले साल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने इसे अपने ऐजेंडा में शामिल कर लिया। उन्होंने सार्वजनिक रूप से यह टिप्पणी की कि ''हिंदू लड़कियों को 'लव जिहाद' के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें इसे जाल में फँसने से बचाया जा सके'' (6 सितम्बर 2014)। इसके बाद, जल्द ही उत्तर प्रदेश में ऐसे पोस्टर सामने आने लगे जिसमें हिंदू भाईयों को 'लव जिहाद' के खिलाफ सचेत किया गया। इसी तरह, गुजरात में अज्ञात लोगों द्वारा 'क्या आप वेश्या बनाना चाहती हैं?' शीर्षक वाला परचा सामने आया। इसमें लड़कियों को उन मुस्लिम लड़कों से सावधान रहने की हिदायत दी गई जो उन्हें शादी का झाँसा देकर अपने जाल में फँसा सकते हैं। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने गुजरात में यह फरमान जारी किया कि जब तक मुस्लिम लड़कों के साथ उनके परिवार के सदस्य न हों, तब तक वे गरबा में भाग नहीं ले सकते हैं। गुजरात में विहिप के प्रांतीय महासचिव रणछोड़ भारवाड़ ने 21 सितम्बर को एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए यह कहा कि 'यदि मुस्लिम लड़के गरबा कार्यक्रमों में भाग लेना चाहते हैं, तो उन्हें पहले हिंदू धर्म अपनाना होगा क्योंकि मुस्लिमों के प्रवेश पर पूर्ण पाबंदी होगी।' इस संदर्भ में लड़कियों को सचेत करने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने विश्वविद्यालयों में जागरूकता अभियान चलाया। इसके बाद मेरठ की एक लड़की शालू का मामला कई हफ्तों तक सुर्खियों में रहा। और अब 'घर वापसी' और 'बहू लाओ बेटी बचाओ' अभियान दक्षिणपंथी ऐजेंडा का प्रमुख भाग बन गया है।

लव जिहाद की पूरी अवधारणा में यह बात बुनियादी रूप से शामिल है कि महिलाओं में अपने से सोचने-विचारने की कोई क्षमता होती ही नहीं है। इसलिए यह दलील दी जा रही है कि परिवार और समाज के पुरुष सदस्यों को ''अपनी औरतों की गतिविधियों को नियंत्रित करना चाहिए, अन्यथा वे 'लव जिहाद' का शिकार हो जाएँगी।''

किसकी हिफाज़त? किससे हिफाज़त?

अपना जीवन-साथी चुनने का अधिकार एक बुनियादी अधिकार है। ऐसे में, यह सवाल पैदा होता है कि आखिर कुछ खास तरह के चुनावों को 'लव जिहाद' का दर्जा क्यों दिया जा रहा है? ऐसी कौन सी बातें है जो केवल हिंदू औरतों और लड़कियों की सुरक्षा को ही आवश्यक बना देती हैं? उनके आज़ादी से जुड़े खतरे क्या हैं? या फिर क्या मुस्लिम या गैर-हिंदू पुरुषों को 'समस्या' या 'खतरे' के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है? क्या हिंदू पुरुषों और लड़कों से यह आह्वान किया जा रहा है कि वे सभी हिंदू लड़कियों के अभिभावक के रूप में काम करें? इस संदर्भ में रोज़मर्रा की ज़िंदगी में जेण्डर(लिंग) के आधार पर होने वाली हिंसा को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? जब कभी हिंदुत्व की दावेदारी का उभार होता है, तो मुस्लिमों से दूरी को ज़्यादा स्पष्टता से रेखांकित करने के लिए औरत का शरीर एक संघर्ष-स्थल में तब्दील हो जाता है। 1920 के दशक में आर्य समाज द्वारा आरंभ किए गए शुद्धि आंदोलन और हिंदू महिलाओं के तथाकथित 'अपहरण' के कारण यह अपील सामने आई थी कि राष्ट्र के सामने पैदा हुए खतरे को देखते हुए हिंदू आदमियों को ज्यादा पौरूषवान होना चाहिए। इसीलिए, हिंदू महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा का आह्वान (तेज़ी से पारम्परिक बंधनों को तोड़ रहे समाज में) महिलाओं को अनुशासित एवं नियंत्रण में रखने का प्रयास है।

आखिर किस चीज़ की हिफाज़त की जा रही है?

अपनी पसंद के इंसान को प्यार करने का साहस मुक्तिदायी होता है और यह प्रत्यक्ष रूप से पारम्परिक जातिवादी समाज के बंधनों को तोड़ता है। एक हिंदू लड़की या फिर किसी भी धार्मिक समुदाय की लड़की दूसरे समुदाय के लड़के से शादी करने का फैसला करके सामुदायिक या जातीय (या सगोत्रीय) विवाह के बंधन को तोड़ती है। दूसरे समुदाय में विवाह करके वह संतति-उत्पत्ति के संदर्भ में अपने पूर्वजों के खून के संबंध की निरंतरता को भंग करेगी। वह भौतिक संसाधनों के उत्पादन की व्यवस्था भी भंग करेगी; इससे यह खतरा पैदा हो जाएगा कि घरेलू काम, रोज़गार, संपत्ति और अन्य आर्थिक संसाधन किसी अन्य समुदाय के हाथ में चले जाएँगे। इसीलिए समाज के आदमियों और अन्य सदस्यों के लिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि वे महिलाओं द्वारा अपना जीवन-साथी चुनने का अधिकार छीनकर उसके श्रम और सेक्सुअलिटी को नियंत्रित करें। इसीलिए 'लव जिहाद' का शिगुफा छोड़ने वाले लोगों का यह तर्क गलत है कि महिलाओं की जिंदगी खतरे में है, बल्कि यहाँ खतरा यह है कि महिलाएँ, जिन्हें समुदाय अपनी सम्पत्ति मानता रहा है, अपनी मर्जी से अपने जीवन-साथी का चुनाव न करने लगें।

मकसद क्या है?

लव जिहाद की बात करने वाले असल में जाति और पितृसत्ता पर आधारित धार्मिक सामाजिक व्यवस्था के दमनकारी और कमज़ोर बुनियाद को मजबूती देना चाहते हैं। ये दोनों ही महिलाओं के साथ-ही-साथ जाति वर्गीकरण में निचले स्तर के समूहों और अल्पसंख्यक धार्मिक समुदायों के हितों के खिलाफ हैं। 'लव जिहाद' एक युवा के आत्म-ज्ञान की प्रक्रिया और वयैक्तिकता की दावेदारी को नष्ट करता है। हम सिर्फ साधारण नैतिक निगरानी के खिलाफ ही नहीं हैं। 'लव जिहाद' अपना जीवन-साथी चुनने के अधिकार के उल्लंघन के साथ-ही-साथ शुद्धता, दूषण, स्व-प्रचार और हिंदू राष्ट्र की स्थापना के लक्ष्य के खतरे में पड़ने से भी संबंधित है। इस तरह का नियंत्रण काफी हद तक उत्तर भारत में खाप पंचायतों द्वारा अंतरर्जातीय विवाहों के नियमन की तरह ही है। फिर भी यह इससे अलग है। अंतरर्जातीय विवाहों के मामले में जाति के नियमों के उल्लंघन को रोकने के लिए इज्ज़त की अवधारणा का सहारा लिया जाता है। वहीं इस मामले में 'लव जिहाद' के नाम पर पाबंदी लगाई जाती है। हालांकि इन दोनों की बुनियाद में महिला और उनकी सेक्सुअलिटी का नियंत्रण निहित है। पर 'लव जिहाद' के मामले में फर्क यह है कि इसके अभियानकर्त्ताओं के मन में हिंदू बहुमतवादी समाज को कायम रखने का उद्येश्य है।

कानून के प्रावधान क्या हैं?

इस तरह के विवाहों का नियमन करने वाले कानून अर्थात् द *स्पेशल मैरिज ऐक्ट, 1954* में यह प्रावधान किया गया है कि इस तरह के अंतर-सामुदायिक विवाहों पर दोनों में से किसी भी पक्ष द्वारा द्विविवाह, पागलपन, या उम्र (अवयस्क होने) के आधार पर आपत्ति दर्ज की जा सकती है। कानून के प्रावधान का सहारा लेने के बजाय राज्य के अधिकारियों ने दक्षिणपंथी ताकतों का अनुकरण करते हुए कार्रवाई की है। मसलन, गुजरात के नर्मदा जिले में प्रशासन ने विहिप की इस माँग को स्वीकार कर लिया कि गरबा के मैदानों में सीसीटीवी कैमरा लगाया जाए और जिले के होटलों ओर गेस्ट हाउसों में निगरानी बढ़ाई जाए। 'शरारती तत्त्वों को रोकने' और 'कानून व्यवस्था कायम रखने' के नाम पर प्रशासन महिलाओं पर नियंत्रण कायम रखने वाले इन ताकतों को प्रोत्साहन दे रहा है।

'बहू लाओ बेटी बचाओ' : पौरुषता का मुद्दा

मुस्लिम पुरुषों को संभावित अपहरणकर्त्ताओं के रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है। हिंदू पुरूषों और महिलाओं को आक्रोषित करने के लिए मुस्लिम रक्त द्वारा शुद्ध हिंदू रक्त के दूषित होने की अवधारणा का इस्तेमाल किया जा रहा है। इस तरह, हिंदू लड़कियों के भाई, पिता, चाचा-मामा, दादा और माता को यह कह कर असुरक्षा बोध से भरा जा रहा है कि उनकी लड़कियों की शुद्धता खतरे में है। हिंदू औरतों के तथाकथित अपहरण को हिंदू पौरूषता के लिए खतरा माना जा रहा है। हिंदू पुरुषों को यह कहकर ललकारा जा रहा है कि वे इस पर अपनी प्रतिक्रिया न देकर मुस्लिमों की घातक योजना का साथ दे रहे हैं। हिंदू राष्ट्र की शुद्धता के पक्ष में हिंदू पुरुषों को खड़ा करने के लिए उनसे यह पूछा जा रहा है कि ''तुम्हारे भीतर का 'मर्द' कहाँ है?''

चुनावी फायदे के लिए साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण

इस बार अंतर यह है कि सत्ताधारी समूह के लोग सीधे तौर पर 'लव जिहाद' की अवधारणा का प्रयोग करके धमकी दे रहे हैं कि अगर आप इसके खिलाफ नहीं बोलेंगें तो आप सत्ताधारियों के खिलाफ हैं । एक लोकतंत्र में हर विचारधारा के लोगों को अपने विचारों के प्रचार-प्रसार का अधिकार होना चाहिए। लेकिन जब चुनावी राजनीतिक सत्ता और विशेषाधिकारों के लिए लोगों को एक अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय के खिलाफ इस तरह भड़काया जाता है कि यह महिलाओं और युवाओं के हितों के विपरीत हो, तो इससे हिंदुत्व प्रोजेक्ट के प्रचारकों की हताशा पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है। 2013 के दंगों के कुछ दिन पहले मुजफ्फरनगर में 'बहू बेटी सम्मान बचाओ सम्मेलन' हुआ था, जिसमें एक समुदाय के लोगों को दूसरे समुदाय के लोगों के विरूद्ध गोलबंद करने के लिए इज्ज़त की इसी तरह की अवधारणाओं का प्रयोग किया गया था। हाल के महीनों में दिल्ली के त्रिलोकपुरी, बवाना और अन्य भागों में साम्प्रदायिक तनाव के उभार और बड़े पैमाने पर हिंदू धर्म में 'पुनर्धर्मान्तरण' को छोटे स्तर पर दक्षिणपंथ के चुनावी हितों को बढ़ावा देने के प्रयास के तौर पर देखा जा सकता है। दिल्ली में चर्च जलाने की घटनाओं के पीछे भी वोटों की तिकड़म ही है। यह पहली बार नहीं है कि अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय के खिलाफ विषैले नफरत की साम्प्रदायिक गतिविधियों का चुनावों में उपयोग किया जा रहा है। खतरनाक बात यह है कि पुरुषों में आवेष भरकर पौरुष के संघर्ष को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि राज्य के हित पूरे हो पाएँ। विचारधारा और राज्य सत्ता - दोनों ही इस तरह से जुड़ गए हैं कि ये सिर्फ हमें हाशिए के तबकों के सामने मौजूद खतरों के प्रति ही नहीं बल्कि वर्षों के संघर्ष के बाद हासिल अधिकारों के खो जाने के डर के प्रति भी सचेत नहीं करते हैं।

पीपल्स यूनियन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स, दिल्ली

सम्पर्क : pudrdelhi@gmail.com, 9868471143

The Jihad is not Against Love Only!

'Love Jihad' is a name given to a kind of movement whereby women from non-Muslim communities are allegedly 'lured' into marrying the Muslim men as a way of furthering conversion to Islam. The issue of 'Love Jihaad' dates back to 2009 when in Kerala a case was reported. Though the Kerala government denied any organized occurrence of such acts, the Hindu and Christian religious groups took it as a threat. Last year, it was imported by RSS chief Mohan Bhagwat on his agenda. He publicly commented about 'teaching Hindu girls about Love Jihad so that they can be saved from its trap'(6 Sept). Posters soon emerged in Uttar Pradesh alerting 'Hindu brothers against 'Love Jihad'' and anonymous pamphlets in Gujarat titled 'Do you want to be prostitutes?' warning girls about Muslim boys who could 'lure' them into marrying them. Muslim boys were denied entry to *garba* events in Gujarat on the diktat of the Vishwa Hindu Parishad (VHP) unless accompanied with their family members. The VHP state general secretary in Gujarat, Ranchhod Bharvad addressing a press conference on 21 September said that "if Muslims boys wanted to join garba events, they must first convert to Hinduism as entry to Muslims would be denied strictly". Akhil Bhartiya Vidya Parishad (ABVP) launched an awareness campaign for girls in universities in this regard. The case of Shalu from Meerut then made headlines for weeks. And now the '*Ghar Wapsi'* and '*Bahu Lao Beti Bachao*' have found its way on the right wing agenda.

At the outset Love Jihad simply poses women without any agency of their own. Therefore, it is argued that male members of family and the society should control actions of 'their women' else they will "fall prey to 'love jihad'".

Protecting Whom? From Whom?

The right to choose one's own partner is a basic right. The question then arises, why certain kind of choices get labeled as 'love jihad'? What necessitates the protection of Hindu women and girls only? What are the dangers associated with their freedom? Or, are Muslim or Non-Hindu men being constructed as 'nuisance'? Are all Hindu men and boys being urged to act as 'guardians' of all Hindu girls? What about the Gender based Violence taking place on day to day basis? Whenever Hindu assertion gets an upsurge, to delineate the distance with Muslims more sharply, the woman's body becomes the site of struggle. The 1920s in context of Shuddhi (purification) movement initiated by Arya Samaj and the alleged 'abductions' of Hindu women, had also seen the appeal to Hindu men to be more masculine given the immediate dangers that faced the nation. Therefore, the call for protection of Hindu women and girls intends to regiment and assume control of women in a society that is rapidly changing and breaking traditional barriers.

What is really being protected?

The courage to love who you want is liberating and directly breaks barriers in a traditional casteist society. By choosing to marry a boy from a different community a Hindu girl, or a girl from any religious community for that matter, challenges endogamy. By marrying into another community, she will adversely affect the system of reproduction of the blood line of her ancestors. She will also affect the system of production of material resources; household work, employment, property and other economic resources which will be at stake of falling into the hands of the other community. It, therefore, becomes utmost importance for men and others members of society to control women's labour and sexuality through taking away her choice of partner. So, what is under threat is not the life of women as argued by claims of 'Love Jihad', but it is really the loss of what the community considers as its property - its womenfolk.

What is the Purpose?

The jihad thus is to consolidate the oppr1essive, shaky foundations of a religious social order that is based on both caste and patriarchy. Both go against the interest of women as well as those at the bottom of caste

hierarchy and minority religious communities. The 'Love Jihad', for the young, destroys the process of self-realization and assertion of one's individuality. It is not simple moral policing we are up against. The 'Love Jihad' more than the violation of right to choose your partner is concerned with purity, pollution, self-propagation and the danger of the pursuit of a Hindu nation. This form of control comes close to the prohibition of inter-caste marriages, regulated by the Khap Panchayats in North India. Yet it is different. In the case of inter-caste marriages, the notion of *Izzat* or honour is invoked to prevent transgression of caste rules. In this case, sanctions are being imposed in the name of 'Love Jihad'. While at the foundation of both lies the control of women and their sexuality, the difference in case Love Jihad is that its campaigners are more concerned about the dangers posed to the maintenance of the Hindu majoritarian society.

What does the Law Provide?

Even the law that governs such marriages, i.e., The Special Marriage Act, 1954 states that any objections to such inter-community marriages can be raised under procedure solely on the grounds of either bigamy, insanity or age (being minor) of either party. Instead of taking clue from the laws, the State functionaries have only acted in compliance with right wing forces. In Narmada district of Gujarat, for example, the administration had accepted the VHP demand for installing CCTV cameras at *garba* grounds, and intensifying surveillance on hotels and guest houses in the district. In the name of preventing 'nuisance' or 'maintaining law and order', they are encouraging these forces in controlling women.

'Bahu Lao Beti Bachao': The Issue of Masculinity

Muslim men are projected as potential abductors. The notion of pure Hindu blood being polluted by Muslim blood is being used to whip up hysteria among Hindu men and women. Thus brothers, fathers, uncles, grandfathers and also mothers of Hindu girls are made insecure as it is alleged that their safety is at stake but in reality it is the 'purity' of their girls which is at stake. The so called abduction of the Hindu women is seen as a threat to Hindu masculinity. It exhorts Hindu men by saying that by not reacting, one is colluding with this sinister design of the Muslims. And to be able to stand up for the purity of the Hindu nation, the Hindu men are asked-'where is the "man" in you?'

Communal Polarization for Electoral Gain

The difference this time is that those who hold the reigns of governance are directly threatening that by not responding to the 'Love Jihad', one is going against them. In a democracy, there should be place to propagate one's views for any ideological persuasion. But when electoral political power and privileges are used to rouse people against a minority religious community in a manner that is inimical to the interests of women and youth, the desperation of the Hindutva project stands exposed. The *'Bahu-Beti Samman-Bachao Mahapanchayat'* held in Muzaffarnagar days before the riots of 2013 invoked similar notions of honour in order to organize people of one community against another. The provoking of communal tensions and violence in Trilokpuri, Bavana and other parts of Delhi in recent months and the movement for mass 're-conversions' to Hinduism are yet another ploys of the limited repertoire of the right wing to further its electoral interests. The calculation of votes has gone on to the burning of churches in Delhi. It is not the first time that communal acts based on virulent hatred of a minority religious community is being used for elections. What is dangerous is that there is manufacturing of clash of masculinity by rousing the passions of men to suit the interests of the state. Both ideology and state power have combined in a manner that makes us aware of not only the threats posed to marginalized sections but also the imminent loss of hard won gains after years of struggles.

People's Union for Democratic Rights, Delhi

Contact: pudrdelhi@gmail.com , 9868471143